P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मध्यप्रदेश में वनाधारित उद्योग

चित्रा राय
सहायक प्राध्यापक,
वाणिज्य विभाग,
शासकीय महाकौशल
महाविद्यालय,
जबलपुर, म.प्र., भारत

प्रीति चडार
शोधार्थी,
वाणिज्य विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर, म.प्र., भारत

सारांश

मध्य प्रदेश मे बड़े उद्योगों की स्थापना बीसवी शताब्दी के प्रारंभ मे हुयी थी, परंतु वास्तविक वृद्धि द्वितीय पंचवर्षीय योजना से हुई।मध्य प्रदेश औद्योगिक दृष्टि से काफी पिछड़ा हुआ प्रदेश है। यहां पर प्रति लाख व्यक्तियों पर कारखानों की संख्या मात्र 5.24 प्रतिशत है। जबकि देश में कारखानों का औसत 14.23 प्रतिशत है। प्रदेश के विभिन्न भागों मे उपलब्ध संसाधनों के आधार पर विभिन्न प्रकार के उद्योगों की स्थापना की गई।किसी भी प्रदेश को विकास के उच्च शिखर पर ले जाने के लिए औद्योगिकरण का विशेष योगदान होता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में ''मध्यप्रदेश में वनोपज आधारित उद्योगों का अध्ययन'' करने का प्रयास किया गया है। मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में स्थापित वनोपज आधारित उद्योगों का सर्वेक्षण किया गया तथा अनुसूची के माध्यम से सूचनाएं एकत्रित की गई। विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से वनोपज आधारित उद्योगों की स्थिति, वित्त व्यवस्था, कच्चे माल की जानकारी, उत्पादन तकनीक की जानकारी, उत्पाद के विपणन की जानकारी, उद्योगों की समस्याएं इत्यादि जानने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : मध्यप्रदेश में वनों की स्थिति, आर्थिक अर्थव्यवस्था, समस्याएं, सुझाव।

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश में वनों से अनेक प्रकार की इमारती लकड़ियां तथा बहुमूल्य वनोपज प्राप्त होती है। मुख्य वनोपज के अंतर्गत सागौन, साल, शीशम, बांस एवं बेंत इत्यादि की बहुमूल्य इमारती लकड़ियां तथा अन्य गौण वनोपज के अंतर्गत जलाऊ लकड़ी, हर्रा बहेड़ा, आंवला, नीम, महुआ, तेंदूपत्ता, गोंद, रबर, खैर, लाख तथा अनेक प्रकार की जड़ी बूटिओं की प्राप्ति होती है। कागज निर्माण करने वाली औद्योगिक इकाईयां वनों से ही बांस, लुग्दी, घास–फूस इत्यादि वनोपजों से कागज बनाने का कच्चा माल प्राप्त करती हैं कत्था बनाने के लिए खैर वृक्ष की लकड़ी भी वनों से ही प्राप्त होती है। रेशम के कीड़े वृक्षों पर ही पाले जाते है। दियासिलाई, पेंट, वर्निश, गौंद, प्लाईवुड लकड़ी का कोयला इत्यादि के लिए कच्चा माल वनों से ही प्राप्त होता हैं। वनोपज आधारित उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराने में वनों का ही योगदान है। अगर वन न हो तो इन उद्योगों को कच्चा माल प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

वनोपज आधारित उद्योग

वनों से प्राप्त होने वाली मुख्य उपज इमारती लकड़ी है। देश में मुख्य रुप से सागौन, साल, शीशम, सरई इत्यादि वृक्षों से लकड़ी प्राप्त होती है। जिसका उपयोग भवन निर्माण, खिड़की–दरवाजे, रेल के डिब्बे, जहाज उद्योग, दिया सिलाई उद्योग, खिलौना उद्योग, कागज उद्योग तथा पैंकिग उद्योग इत्यादि कार्यों के लिए किया जाता है। वनोपज के अलावा वनों से लघु एवं गौण वनोपज भी प्राप्त होती है। बांस एवं बेंत, तेंदूपत्ता, गौंद, रबर,, लाख, शहद, हर्रा एवं बहेड़ा, महुआ, कत्था, आंवला, चंदन विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियां इत्यादि वनों से ही प्राप्त होती है।

बांस एवं बेंत – बांस एवं बेंत का उपयोग कागज उद्योग के लिए किया जाता है। बांस की लकड़ी का उपयोग घरेलू कार्य के अलावा माचिस, भवन निर्माण, कागज निर्माण इत्यादि में किया जाता है। लघु एवं कुटीर उद्योग में भी टोकरी, सूपा, पंखा, खिलौना, फनी।चर निर्माण में किया जाता है।

तेंदू – तेंदूपत्ता का उपयोग बीड़ी उद्योग में बीड़ी बनाने के लिए किया जाता है।

गोंद – गोंद का उपयोग गोंद निर्माण उद्योग में किया जाता हैं।

रबर – रबर के पौधे का प्रयोग रबर उद्योग में किया जाता हैं।

लाख – लाख का उपयोग गहने तथा चपड़ा इत्यादि उद्योग में किया जाता है।

शहद – शहद का उपयोग औषधि उद्योग में बहुतायत रुप में किया जाता है।

हर्रा एवं बहेड़ा – हर्रा एवं बहेड़ा का उपयोग चर्मशोधन उद्योग, रंग निर्माण उद्योग तथा औषधि निर्माण उद्योग के लिए किया जाता हैं।

महुआ – महुआ का उपयोग शराब बनाने में किया जाता है।

आंवला – आंवला से त्रिफला चूर्ण तैयार किया जाता है जो विभिन्न रोगों में औषधि के रुप में उपयोगी होता है।

चंदन – चंदन की लकड़ी का उपयोग चंदन पाउडर और तेल निर्माण इत्यादि उद्योगों में किया जात है।

वनों से हमें प्रत्यक्ष रुप से लकड़ी और गौण वनोपज की प्राप्ति होती है, वहीं सरकार को कर राजस्व, उद्योगों को कच्चा माल तथा समाज को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इमारती एवं जलाऊ .लकड़ी की प्राप्ति होती है। वनों से हमें अप्रत्यक्ष रुप से अनेक लाभ प्राप्त होते है। जिनका मुद्रा के रुप में मूल्यांकन करना संभव नहीं हैं। वनों से जलवायु पर नियंत्रण, वर्षा में वृद्धि, भूमिरक्षण पर रोक, भूमि में नमी एवं आर्द्रता बनाए रखना, मरुस्थल प्रसार पर रोक लगाना, वायु एवं ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रण करना, जल के स्तर में वृद्धि करना, भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि करना, क्षेत्र के प्राकृतिक सौंदर्य में वृद्धि करना जैसे अनेक अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होते है।

साहित्यावलोकन

नेमा (2003) ने मध्यप्रदेश के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास में सहकारी बैंकों की भूमिका विषय के अंतर्गत बतलाया है कि मध्यप्रदेश एक कृषि प्रधान राज्य है तथा राज्य की अर्थवयवस्था में कृषि का योगदान सर्वाधिक है। कृषि के विकास एवं आधुनिकीकरण हेतु वित्तीय सहायता की सदैव आवश्यकता पड़ती है। कृषि कार्यों हेतु अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन ऋणों को उपलब्ध कराने में सहकारी बैंकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। वर्तमान समय में कृषि पर आधारित उद्योगों की स्थापना में तेजी से वृद्धि हुई है। राज्य में औद्योगिक वातावरण का निर्माण वर्तमान सरकार द्वारा किया गया है जिससे राज्य में उद्योग स्थापना हेतु न केवल देश के वरन् विदेश के उद्योगपति भी आकर्षित हो रहे है। लघु उद्योगों की स्थापना में सहकारी बैंकों की भूमिका सराहनीय है। बैंकों को उद्योगों की स्थापना हेतु दीर्घकालीन एवं मध्यकालीन ऋण प्राप्त होते है। सरकार उद्योग स्थापना हेतु बैंकों से ऋण लेने पर सहायता एवं अनुदान के रुप में सहयोग राशि भी प्रदान करती है।

सिंह (2004) ने वस्त्र उद्योग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि वस्त्र उद्योग विश्व में प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है क्योंकि मनुष्य को अपने जीवनयापन के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता होती है। विश्व के कुल कपड़ा उद्योग में सूती वस्त्र उद्योग का हिस्सा लगभग 60 प्रतिशत है। सूती वस्त्र उद्योग विश्व का वृहतम् वस्त्र उद्योग हैं यह एकमात्र ऐसा उद्योग है जो आधुनिक कारखाना प्रणाली से अत्याधिक प्रभावित हुआ है और विश्व के अधिकांश देशों के औद्योगिकीकरण में सूती वस्त्र उद्योग ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। सूती वस्त्र उद्योग के 4 चरण होते है। 1. कटाई कारखाने, 2. बुनाई कारखाने, 3. तेयार करने वाले कारखाने, 4. कपड़े सिलने या बुनाई करने वाले कारखाने। ये सभी चरण आर्थिक एवं भौगोलिक रुप से बहुत से घटकों द्वारा प्रभावित होती है। निर्मित या सिले हुए कपड़ों पर परिवहन व्यय अधिक करना पड़ता है क्योंकि से इकाईयां बाजार के अधिक नजदीक होती है। कपास साफ करने का उद्योग विकेंद्रित रुप से होता है क्योंकि बिनौले का वनज प्रति इकाई कपास में लगभग दो तिहाई होता है। भारत का सूती वस्त्र उद्योग देश का सबसे प्राचीन उद्योग है। देश में आधुनिक उत्पादन प्रणाली विकसित करने का श्रेय सूती वस्त्र उद्योग को जाता है। यह भारत का सबसे बड़ा उद्योग है। हमारे देश के संपूर्ण औद्योगिक उत्पादनका लगभग 40 प्रतिशत भाग सूती वस्त्र उद्योग से प्राप्त होता है। देश का प्रथम स्वदेशी पूंजी पर आधारित कारखाना 1859 में मुबंई में स्थापित किया गया। देश का विभाजन होने से प्रमुख रुई उत्पादक प्रदेश पाकिस्तान में रह गए जबकि ज्यादातर मिले भारत में थी।

गर्ग (2006) के अनुसार मध्यप्रदेश भैगोलिक और जैविक विधिता, कांटेदार जंगलों से लेकर, उपोष्ण कटिबंधीय पहाड़ी जंगलों जैसे 18 वन प्रकारों से परिलक्षित होता है। राज्य व प्राकृतिक और 11 कृषि जलवायु क्षेत्रों में बंटा हुआ है। राज्य में साल, शीशम, सागौन, तेंदू, महुआ, टेसू, पलास इत्यादि के वृक्ष पाए जाते है। जिनसे लकड़ी के अलावा कई प्रकार के वनोत्पाद प्राप्त होते है। आंवला, गौंद, तेंदूपत्ता, सालबीज,हर्रा, लाख, अचार, महुआ आदि वनोत्पाद प्राप्त होते है। प्रदेश के वन और वनोपज पर आधारित उद्योग राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते है। वनसंपदा के आर्थिक महतव को समझते हुए राज्य में वन उत्पादन के व्यापार के व्यवस्थापन के प्रयास किए जा रहे है। सालबीज, कुल्लु, तेंदूपत्ता, गौंद इत्यादि वनोपज के व्यापार के लिए सरकार पूर्ण समर्थन प्रदान करती है। सरकारी समितियों के माध्यम से वनोपज का एकत्रिकरण, संग्रहण एवं व्यवसाय किया जाता है। मध्यप्रदेश के विभिन्न वनोत्पादों की राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय बाजार में बहुत अधिक मांग है। राज्य सरकार द्वारा 16 हजार वन प्रबंधन समितियों का गठन वनक्षेत्रों के संरक्षण एवं प्रबंधन के लिए किया गया। राज्य के इस महत्वपूर्ण संसाधन को समुदाय की भागीदारी और विक्रेन्द्रीकरण जैसे अभिनव उपायों के माध्यम से संरक्षित और इस्तेमाल किए जाने की आवश्यकता है।

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोधपत्र में शोध परिकल्पना इस प्रकार है–

1. मध्यप्रदेश में वनोपज आधारित उद्योगों के विकास की असीम संभावनाएं है।
2. जनसंख्या वृद्धि एवं मानवीय आवश्यकताओं की के कारण वन क्षेत्रफल में निरंतर कमी होती जा रही है।।
3. वनोपज आधारित उद्योगों को वर्षभर कच्चा माल उपलब्ध होता हैं।

शोध के उद्देश्य

1. मध्यप्रदेश में स्थित वनोपज का अध्ययन करना।
2. वनोपज पर आधारित उद्योगों की स्थिति का अध्ययन करना।

3. मध्यप्रदेश वनोंपज को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों का अध्ययन करना।

सारणीयन एवं वर्गीकरण

प्रस्तुत शोधपत्र में मध्यप्रदेश में वनोपज आधारित उद्योगों का अध्ययन'' करने हेतु मध्यप्रदेश के सभी 5 जिलों में स्थापित कुटीर, लघु मध्यम एवं वृहद् उद्योगों से सूचनाएं एकत्रित की है। यथा संभव शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रुप से इन औद्योगिक इकाईयों में जाकर साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित समंकों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं निर्वचन किया है। मध्यप्रदेश में वनोपज आधारित लघु, मध्यम एवं वृहद् 100 इकाईयों का सर्वेक्षण किया गया है।

1. औद्योगिक इकाई द्वारा उत्पादित माल के विवरण के आधार पर वर्गीकरण – औद्योगिक इकाईयों द्वारा उत्पादित माल के संबंध में प्राप्त जानकारी का विवरण निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है –

तालिका क्रमांक 1

उत्पादित माल के विवरण के आधार पर वर्गीकरण

क्रमांक	औद्योगिक इकाई	संख्या	प्रतिशत
1	तेल एवं इत्र	12	12
2	औषधी	30	30.00
3	मादक पदार्थ	8	8.00
4	रेशम उत्पादन	6	6.00
5	काष्ठ उद्योग	25	25.00
6	कागज एवं पेपर मिल	7	7.00
7	अन्य	12	12.00
	योग	100	100.00

स्रोत– प्राथमिक समंकों के आधार पर

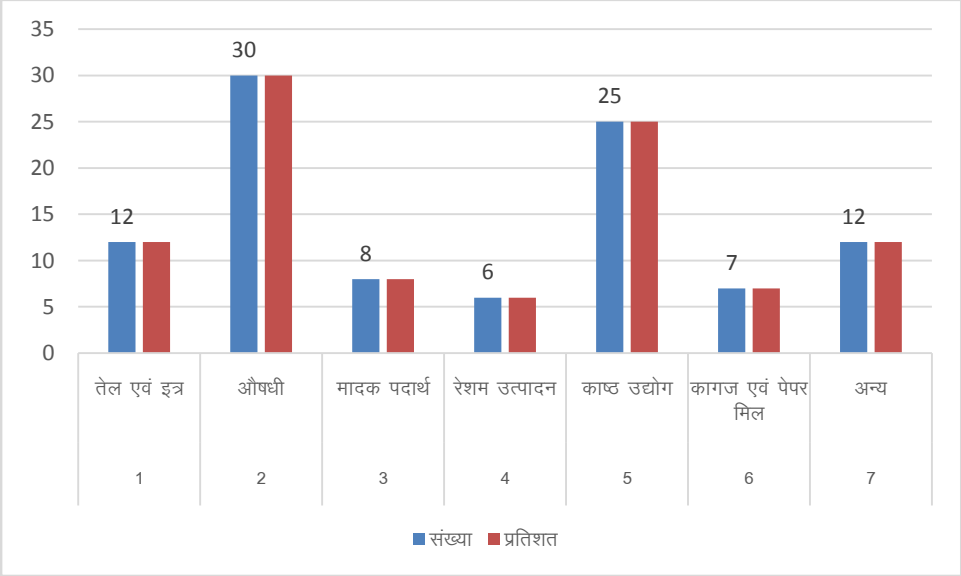

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित इकाईयों कुल 100 में से तेल एवं इत्र उत्पादन से संबंधित इकाईयां 12, औषधी बनाने वाली औद्योगिक इकाईयों की संख्या 30, मादक पदार्थ निर्मित करने वाली इकाईयों की संख्या 8, कीड़े पालने एवं रेशम के धागों से वस्त्र बनाने वाली इकाइयों की संख्या 6, फर्नीचर उद्योग में संलग्न इकाईयों की संख्या 25, कागज एवं पेपर मिल बनाने वाली इकाइयों की संख्या 7, अन्य इकाइयों की संख्या 12 है। अन्य उद्योग जैसे लाख से बनी वस्तुओं का निर्माण, गोंद निर्माण, प्लाईवुड निर्माण, कत्था निर्माण, स्याही निर्माण, बांस एवं बेंत से बने सामान इत्यादि।

2. औद्योगिक इकाई की प्रारंभिक लागत के आधार पर वर्गीकरण – औद्योगिक इकाई की प्रारंभिक लागत के संबंध में सभी सर्वेक्षित इकाईयों से जानकारी लेने पर ज्ञात हुआ कि अधिकांश इकाईयां 50 लाख से कम पूंजी से स्थापित की गई थी जो लघु एवं कुटीर उद्योग के तौर पर स्थापित की गई थी। वृहद् पूंजी वाली औद्योगिक इकाईयों की संख्या सीमित थी। पूंजी की लागत की जानकारी का विवरण निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है –

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका क्रमांक 2

प्रारंभिक लागत के आधार पर वर्गीकरण

क्रमांक	प्रारंभिक लागत	इकाईयों की संख्या	प्रतिशत
1	1 करोड़ से कम	45	45.00
2	1 करोड़ रु. से 2 करोड़ रु.	20	20.00
3	2 करोड़ रु. से 3 करोड़ रु.	15	15.00
4	3 करोड़ रु. से अधिक	20	20.00
	कुल योग	100	100.00

स्रोत– प्राथमिक समंकों के आधार पर

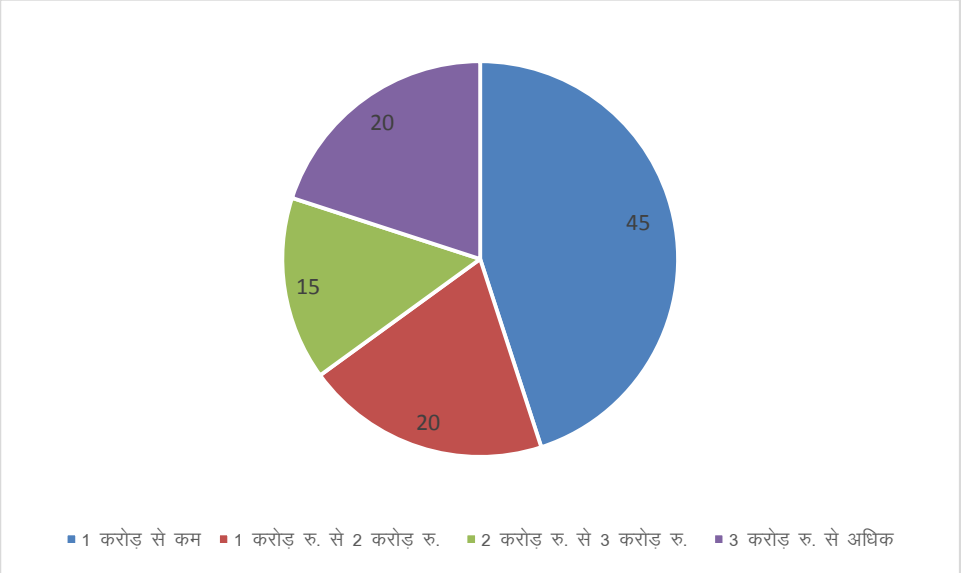

उपरोक्त तालिका का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि वनोपज आधारित उद्योगों में किए गए प्रारंभिक पूंजी विनियोजन के संबंध में सबसे अधिक इकाईयां 1 करोड़ रु. से कम पूंजी वाली थी। कुल सर्वेक्षित इकाईयों में से 45 इकाईयां 1 करोड़ रु. से कम की प्रारंभिक पूंजी विनियोजित वाली है। 1 करोड़ रु. से 2 करोड़ रु. की पूंजी विनियोजित की जाने वाली इकाईयों की संख्या 20, 2 करोड़ रु. से 3 करोड़ रु. की पूंजी विनियोजित किए जाने वाली इकाईयों की संख्या 15, ऐसी औद्योगिक इकाईयों की संख्या जिनमें 4 करोड़ रु. या इससे अधिक का पूंजी विनियोजन किया गया उनकी संख्या 20हैं। अतः निष्कर्ष स्वरुप हम यह कह सकते है कि वनोपज आधरित उद्योगों में बड़े पैमाने पर पूंजी विनियोजन किए जाने की आवश्यकता है। वर्तमान में ज्यादातर इकाईयां लघु एवं कुटीर उद्योग के तौर पर ही संचालित की जा रही है।

3. औद्योगिक इकाई की उत्पादन क्षमता के आधार पर वर्गीकरण – औद्योगिक अकाई की उत्पादन क्षमता के संबंध में जानकारी लेने से जो सूचनाएं प्राप्त हुई उनका विवरण निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है–

तालिका क्रमांक 3

औद्योगिक इकाई की उत्पादन क्षमता के आधार पर वर्गीकरण

क्रमांक	उत्पादन क्षमता	इकाईयों की संख्या	प्रतिशत
1	50 प्रतिशत से कम	10	10.00
2	50 प्रतिशत से 75 प्रतिशत	46	46.00
3	75 प्रतिशत से 100 प्रतिशत	24	24.00
4	100 प्रतिशत से अधिक	20	20.00
	योग	1600	100.00

स्त्रोत– प्राथमिक समंकों के आधार पर

50 प्रतिशत से कम उत्पादन क्षमता पर कार्य करन वाली औद्योगिक इकाईयों की संख्य मात्र 10, 50 प्रतिशत से 75 प्रतिशत उत्पादन क्षमता पर कार्य करने वाली इकाईयों की संख्या 46, 75 प्रतिशत से 100 प्रतिशत कार्य क्षमता पर कार्य करने वाली औद्योगिक इकाईयों की संख्या 24 100 प्रतिशत से अधिक उत्पादन क्षमता पर कार्य करने वाली इकाईयों की संख्या 20 है।

निष्कर्ष

म.प्र. में भारत के वन क्षेत्रफल का 30.72 प्रतिशत क्षेत्र जो एक तिहाई से भी अधिक है, होने के बावजूद भी म.प्र. वनोपज आधारित उद्योगों के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है।

म.प्र. में साल, सागौन, शीशम, महुआ, आम, बबूल, घैर, धवा, तेंदूपत्ता, बांस इत्यादि के वृक्ष बहुतायत में पाए जाते है। साल और सागौन के तो जंगल है। लाख, भिलाला, महुआ, आंवला, नीम, सालबीज, हरड़, बहेड़ा, गौंद, तेंदूपत्ता जैसी महत्वपूर्ण औषधीय गुण वाली वनोपज होने के बावजूद भी इन पर आधारित वृहद् उद्योगो का अभाव है।

म.प्र. के औद्योगिक पिछड़ापन को दूर करने के लिए सरकार ने अनेक प्रयास किए है। विदेशी पूंजी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए इंदौर, भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर, उज्जैन इत्यादि शहरो में बड़े–बड़े औद्योगिक मेले (समिट) समय–समय पर आयोजित किए गए है। इन मेलो में न केवल देश के वरन् विदेशो के उद्योगपतियों को भी प्रदेश में पूंजी निवेश करने हेतु आमंत्रित किया गया था। अनेक उद्योग पतियों ने प्रदेश में पूंजी निवेश करने में अपनी रूचि भी दिखाई है। म.प्र. के औद्योगिक पिछड़ापन को दूर करने के लिए सरकार पूंजीपतियों एवं उद्योगपतियों को प्रदेश में पूंजी निवेश करने अर्थात् उद्योगो की स्थापना करने के लिए आमंत्रित तो कर रही है किन्तु प्रदेश में औद्योगीकरण का वातावरण बनाने के लिए यह भी आवश्यक है कि सरकार उद्योगो के लिए आधारभूत सुविधाएं जैसे भूमि, बिजली, पानी, सड़के, परिवहन एवं संचार सुविधाएँ इत्यादि उपलब्ध कराए। प्रदेश में औद्योगिकरण का वातावरण बनाए जाने की अत्यंत महती आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

द्विवेदी, ए. पी. : ''वन प्रबंध के सिद्वांत'', सूर्या पब्लिकेशन, देहरादून, 1989.

नेमा एम एल : ''कृषि एवं वनोपज आधारित उद्योगों में संस्थागत वित्त की भूमिका, योजना, भारत सरकार प्रकाशन, नई दिल्ली,1999,

सिंह डॉ. जगदीश : ''भारत : भौगोलिक आधार एवं आयाम'', राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2004.

गर्ग राजीव : ''मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा

सदानगीडॉ. बी. एन., दास अशेकचरण : ''कृषि व्यवसाय में रोजगार की संभवनाएं'', रोजगार समाचार 10–18दिसंबर 2006, भारत सरकार नई दिल्ली।

कुमार मंयक : ''नर्सरी लगाए रोजगार पाए'', उद्यमिता मासिक पत्रिका, उद्यमिता विकास केंद्र, भोपाल, जनवरी 2006.

गुप्ता अनुपम दास : ''लघु उद्योगों का उन्नयन'', कुरुक्षेत्र, मासिक पत्रिका, नई दिल्ली, फरवरी 2007 पेज नं. 39